Satguru Shree Shivkrupanand Swami

Founder :

International : Shree Shivkrupanand Swami Foundation - Singapore
3, Coleman Street, #04 - 27, Peninsula Shopping Centre,Singapore - 179804.

India :

Yoga Prabha Bharati Seva Sanstha Trust
A/8 - 30,Siddh Co-op.Hsg.Society,
Siddharth Nagar No.2,Goregaon (West),
Mumbai - 400 062.• Phone :022-2871 0077

Shree Shivkrupanand Swami Ashram Trust
Eru Abrama Road, Eru Char Rasta,
Eru, Navsari - 396 445
Phone : 02637-324755

Web Site : www.shivkrupanandji.org • Email : samarpanmaster@gmail.com

ॐ

आत्मपरीक्षण

सभी पुण्य आत्माओ मेरा नमस्कार - - -

- - - प्रत्येक "गुरुपोर्णिमा" सदैव साधको के जिवन मे आध्यात्मीक प्रगती की ओर "एक कदम" होती है। और इस बार की गुरुपोर्णिमा तो विषेष गुरुपोर्णिमा थी। क्योकी वह प्रथम बार "गुरुस्थान" पर मनायी गयी थी। इसी लीये गुरुपोर्णिमा के बाद साधको मे एक बदलाव आया है। "गुरुशक्तीयो से जुडा हुआ" प्रत्येक साधक आज अपनी आध्यात्मीक स्थिती को जानना चाहता है। वह चाहता है, की कम से कम उसे पता तो चले की उसकी "आध्यात्मीक स्टेज" मे कितनी प्रगती हुयी है, और उसे कितनी प्रगती करना बाकी है, यह अपने स्थिती के बारे मे सोचना ही प्रगती की पहली पादान है। और इसी विषय पर हजारो साधको के "फज" मुझे आ रहे है। यह एक अच्छी आध्यात्मीक स्थिती की निशानी है, अन्यथा कई साधको को तो इस विषय मे भी सोचने की फुरसत नही है। वे अपनी ही परीस्थीतीयो के प्रभाव मे होते है, वास्तव परीस्थीतीया कभी स्थाई नही होती प्रत्येक सुबह के पहले अंन्धेरा होता ही है, इस लिये जिवन मे भी जब खराब परीस्थीतीयो का अंन्धेरा हो तब हमे कल

Satguru Shree Shivkrupanand Swami

Founder :

International : Shree Shivkrupanand Swami Foundation - Singapore
3, Coleman Street, #04 - 27, Peninsula Shopping Centre,Singapore - 179804.

India :

Yoga Prabha Bharati Seva Sanstha Trust
A/8 - 30,Siddh Co-op.Hsg.Society,
Siddharth Nagar No.2,Goregaon (West),
Mumbai - 400 062.• Phone :022-2871 0077

Shree Shivkrupanand Swami Ashram Trust
Eru Abrama Road, Eru Char Rasta,
Eru, Navsari - 396 445
Phone : 02637-324755

Web Site : www.shivkrupanandji.org • Email : samarpanmaster@gmail.com

के सुबह के बारे मे सोचना चाहिये। मेरे जिवन मे भी प्रत्येक क्षण को परिस्थितीया बदलती थी। और उन हिमालय की वादियो मे मै अकेला ही था। "मृत्यु" तो कई बार पास से गुजर गयी थी। अब सोचता हु तो मुझे ही अचरज लगता है। की इतने भंयकर जंगल और इतने बर्फीले पहाडो से मै जिवीत कैसे बाहर आ गया। वह शायद इस लीये आ सका क्योकी गुरुदेव को मुझे आप तक पहुचाना था। अन्यथा मृत्यु तो एक छाया के समान सदैव साथ मे ही थी एक गलत स्थान पर रखा गया कदम ही मृत्यु तक पहुचा सकता था। मै उन क्षेत्रो का जानकार भी नही था। लेकीन प्रत्येक सांस लेते समय लगता था। की गुरुदेव मेरे साथ ही है, इसी लीये मुझे जिवन मे कभी भी कही भी ऐसा नही लगा की मै अकेला हु। पलक बंद करते ही गुरुदेव को साथ पाता हु। इस बार की "गुरुपोर्णिमा" मे नमस्कार के समय दो प्रकार के साधक लाईन मे थे एक थे जो गुरुदेव के साक्षात दर्शन कर रहे थे। और यह लाईन कभी समाप्त ही नही हो और जिवन भर हम युही लाईन मे खडे रहे ऐसा सोच रहे थे। और दुसरी ओर वे साधक थे जो सोच-

Satguru Shree Shivkrupanand Swami

Founder :

International : Shree Shivkrupanand Swami Foundation - Singapore
3, Coleman Street, #04 - 27, Peninsula Shopping Centre,Singapore - 179804.

India :

Yoga Prabha Bharati Seva Sanstha Trust
A/8 - 30,Siddh Co-op.Hsg.Society,
Siddharth Nagar No.2,Goregaon (West),
Mumbai - 400 062.• Phone :022-2871 0077

Shree Shivkrupanand Swami Ashram Trust
Eru Abrama Road, Eru Char Rasta,
Eru, Navsari - 396 445
Phone : 02637-324755

Web Site : www.shivkrupanandji.org • Email : samarpanmaster@gmail.com

रहे थे। कितनी लंबी लाईन है, कब यह खत्म होगी और कब हमे भोजन प्रसाद प्राप्त होगा क्या मालुम, जब की उनके सामने गुरुदेव भी भुखे ही बैठे थे इसकी खयाल नहीं था। आप किस लाईन मे थे वह आप अपना परीक्षण करो। आप के सभी के प्रश्नो का एक ही उत्तर है, कुछ मापदंड यहाँ दे रहा हुं, आप इन पर अपना आत्म परिक्षण करके देखे।

(1) आप नियमीत रुप से ध्यान करते है क्या ? (हाँ)

(2) आप को भुतकाल के विचार आते है क्या ? (नहीं)

(3) आप अनुशासन का पालन करते है। क्या ? क्योंकी "अनुशासन" ही समर्पण की पहली "पादान" है। (हाँ)

(4) आप के मन मे किसी के प्रती बैर भाव है। क्या ? आप किसी का भी बुरा चाहते है, क्या ? (नहीं)

(5) आप आपके जिवन से संतुष्ट है क्या ? (हाँ)

(6) आप आपके शरीर मे चैतन्य की लहरीया अनुभव करते है। क्या ? (हाँ)

(7) आप अंहकार से रहीत हो कर अपने आत्म संतुष्टी के लीये ही गुरुकार्य करते है क्या ? (हाँ)

Satguru Shree Shivkrupanand Swami

Founder :

International : Shree Shivkrupanand Swami Foundation - Singapore
3, Coleman Street, #04 - 27, Peninsula Shopping Centre,Singapore - 179804.

India :

Yoga Prabha Bharati Seva Sanstha Trust
A/8 - 30,Siddh Co-op.Hsg.Society,
Siddharth Nagar No.2,Goregaon (West),
Mumbai - 400 062.• Phone :022-2871 0077

Shree Shivkrupanand Swami Ashram Trust
Eru Abrama Road, Eru Char Rasta,
Eru, Navsari - 396 445
Phone : 02637-324755

Web Site : www.shivkrupanandji.org • Email : samarpanmaster@gmail.com

(8) आप थोड़ा समय अपनी आत्मा के साथ अकेले में बीताते है क्या ? (हाँ)

(9) आप को एकान्त मे "ओम्हनाद" सुनायी आता है, क्या ? (हाँ)

(10) कभी सदगुरु के "सुक्ष्म शरीर" दर्शन होता है, क्या ? (हाँ)

(11) क्या सदगुरु के "संदेश" संन्देश मिलने के पुर्व प्राप्त होते है, ? (हाँ)

(12) आप को कभी अचानक ही "चंदन" की खुशबु या "गुलाब" की खुशबु आपके ही भितर से निकल रही है, यह अनुभुती हुयी है, क्या ? (हाँ)

(13) एक कमल की तरह आप समाज मे रहते हुये भी सभी प्रकार के बुरे प्रभाव से अपने आप को "मुक्त" पाते है, क्या ? (हाँ)

(14) आप "स्वंयम" कौन है ? आप यहाँ क्यो आये है, और आप को कहा जाना है, यह आपको मालुम है क्या ? (हाँ)

(15) आप आपके "सदगुरु" के सत्य स्वरुप को जानते है, क्या ? आप किनके जिवनकाल मे जि रहे है, और आप का और उनका क्या "समंन्ध" है, ? (हाँ)

(16) आप का ध्यान पलक झपकते ही लग जाता है, क्या ? (हाँ)

(17) आप सदैव सभी की "मंगल" की ही कामना करते है, क्या (हाँ)

(18) आप को आपके ही भितर से ही "ओम्हनाद" सुनायी आता "सदैव" है, क्या ? (हाँ)

Satguru Shree Shivkrupanand Swami

Founder :

International : Shree Shivkrupanand Swami Foundation - Singapore
3, Coleman Street, #04 - 27, Peninsula Shopping Centre,Singapore - 179804.

India :

Yoga Prabha Bharati Seva Sanstha Trust
A/8 - 30,Siddh Co-op.Hsg.Society,
Siddharth Nagar No.2,Goregaon (West),
Mumbai - 400 062.• Phone :022-2871 0077

Shree Shivkrupanand Swami Ashram Trust
Eru Abrama Road, Eru Char Rasta,
Eru, Navsari - 396 445
Phone : 02637-324755

Web Site : www.shivkrupanandji.org • Email : samarpanmaster@gmail.com

(19) आप समर्पण ध्यान कोर्स आवश्यकता को पुर्ण करने के लिये करते है। क्या (नही)

(20) आप की परमात्मा की खोज समाप्त हो गयी है, क्या (हाँ)

(21) आप जिवन मे सपुर्ण आत्मशान्ती का अनुभव कर पा रहे है क्या? (हाँ)

यह उपरोकत प्रश्न ही आप अपने आप से पुछे और अगर आप के उत्तर सही उत्तर से मेल खाते है, तो हो आप सपुर्णतक पहुच गये हो केवल आध्यात्मिक प्रगती की बात इस लीये कह रहा हु। क्योकी एक योगी के सामने तो "समृद्धी" हाथ जोडे सदैव खडी ही रहती है। योगी की आवश्यकता के पुर्व "समृद्धी" आवश्यकता को पुर्ण करती है। और आपके जो उत्तर सही नही है, तो अभी एक लंबा ध्यान साधना का सफर आपको करना बाकी है, यह जानकर सफर पर चल पडीये। जिवन के हर मोड पर आप मुझे अपने भितर ही पायेगे। क्योकी अब "मै" मेरा न रहा हु "आपका" सर्वस्व हो चुका हु। यह मै अनुभव कर रहा हु। आप भी कभी अनुभव करके देखे। इसी "आर्शिवाद" के साथ

आपका
बाबास्वामी